International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 5, May - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सांख्य शब्द का अर्थ एवं प्राचीन सांख्याचार्यों का संक्षिप्त वर्णन : एक वैचारिक मत

नवल किशोर
शोध–छात्र
दर्शनशास्त्र विभाग
बी0आर0ए0 बिहार विश्वविद्यालय
मुजफ्फरपुर।

'सांख्य' शब्द की व्युत्पत्ति 'संख्या' शब्द के आगे अण् प्रत्यय जोड़ने से होती है। 'संख्या' शब्द की व्युत्पत्ति सम्+चक्षिङ् धातु – ख्याञ दर्शने + अङ् प्रत्यय + टाप् है जिसके अनुसार इसका अर्थ सम्यक् ख्याति, सम्यक् ज्ञान, सत्य ज्ञान है।[1] सांख्य का यह सम्यक् ज्ञान व्यक्ताव्यक्त रूप द्विविध अचित् तत्त्व से पुरुष रूप चित् तत्त्व को पृथक् जान लेने में निहित है। ऊपर से प्रपंचासक्त दिखाई पड़ने वाला पुरुष वस्तुतः अनासक्त या निर्लिप्त रहता है जिसे कारिकाकार ईश्वरकृष्ण एवं सांख्यतत्त्वकौमुदीकार वाचस्पति मिश्र ने सत्त्वपुरुषान्यता ख्याति, विवके–ख्याति, व्यक्ताव्यक्त विज्ञान, विवेकज्ञान आदि नामों से अभिहित किया है। इसी विवेक ज्ञान से परम पुरुषार्थ अर्थात् मानव जीवन के परम लक्ष्य 'मोक्ष' की सिद्धि मानते हैं। इस प्रकार 'संख्या' शब्द सांख्य की सबसे बड़ी दार्शनिक खोज का वास्तविक स्वरूप प्रकट करने वाला संक्षिप्ततम् नाम है जिसके सर्वप्रथम तथा सर्वप्रबल व्याख्याता होने से वह अत्यन्त प्राचीन काल में 'सांख्य' नाम से अभिहित हुआ और ऐसा होना सर्वथा ठीक ही था।[2]

परम्परागत मान्यता के अनुसार सांख्य के प्रथम आचार्य महामुनि कपिल माने जाते हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से कपिल के नाम का सर्वप्रथम उल्लेख श्वेताश्वतरोपनिषद् के 'ऋषि प्रसूतं कपिलं यस्तमग्रे ज्ञानैर्विभर्ति जायमान च परिचयेत; (5/2) मंत्र में मिलता है। भागवद्गीता में श्रीकृष्ण स्वयं को 'सिद्धानां कपिलो मुनि अर्थात् सिद्धों में कपिल मुनि बताते हैं। श्रीमद्भागवत् (3/24) के अनुसार कपिल के पिता का नाम कर्दम और माता का नाम देवहूति था।[3] माठरवृत्ति में भी इसका उल्लेख है – कर्दमस्य पुत्रः स्वायम्भुवस्य मनोर्दुहितोरि देवहूत्यां कपिलो नाम वभूव।[4] इस प्रकार प्राचीन भारतीय परम्परा कपिल को 'सांख्य दर्शन' का आदि प्रवर्तक मानती है

किन्तु उन्होंने किसी ग्रन्थ की रचना की थी इसके संबंध में सांख्य दर्शन के विद्वानों में मैतक्य नहीं है।

परमर्षि कपिल के साक्षात् शिष्य आसुरि हुए। डॉ0 कीथ आसूरि को ऐतिहासिक व्यक्ति नहीं मानते।[5] जबकि गोपीनाथ कविराज ने आसुरि को ऐतिहासिक व्यक्ति माना है।[6]

महाभारत में पंचशिख को आसुरि का प्रथम शिष्य बताया गया है। चीन देश की परम्परा के अनुसार पंचशिख ने षष्टितंत्र की रचना की थी किन्तु षष्टितन्त्र पर विचार करने से निष्कर्ष निकलता है कि इन्होंने इस ग्रन्थ की रचना नहीं की बल्कि इसका विस्तार एवं प्रचार किया था। ई0एफ0 हॉल ने सांख्यसार की भूमिका में लिखा है कि स्वप्नेश्वर ने अपनी 'कौमुदीप्रभा' नामक कृति में 'सांख्यप्रवचनसूत्र' को पंचशिख कृत माना है और यह बताया है कि सांख्यशास्त्र का प्रवर्तक कपिल के द्वारा होने के कारण वह सूत्र कपिल की कृति मान ली जाती है।[7]

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1. सांख्यदर्शन की ऐतिहासिक परम्परा – डॉ0 आद्या प्रसाद मिश्र, पृ0–04
2. वही, पृ0–04
3. भगवद्गीता 102/26
4. माठरवृत्ति कारिका 1, पृ0–2
5. माठरवृत्ति कारिका 73, पृ0–215
6. सांख्य सिद्धान्त, पृ0–491
7. जयमंगला (भूमिका), पृ0–31